हुसैन पर विलाप

लेखक : जनाब मिर्जा सज्जाद हूसैन साहब, साहित्य विशारद

इमाम हुसैन की करूणाजनक एंव विलापपूर्ण हत्या (शहादत) पर अश्रुधारा प्रवाहित करने पर उनके शत्रु दो प्रकार से आक्षेप करते थे।

(1) स्वास्थ्य एंव संसारिक दृष्टिकोण से

(2) धार्मिक दृष्टिकोणानुसार।

वास्तव में इन आक्षेपों का भी मूल्य नहीं है एंव यह निराधार है। सच पूछिए तो यह बाहरी ह्रदय से हुसैन के प्रेमी विलाप पर आक्षेप की आड़ लेकर हुसैन के बलिदान–बखान तथा उनके आदर्शो एंव शिक्षाओं के वर्णन को समूल नष्ट कर देने का व्यर्थ भगीरथ प्रयास करते हैं।

प्रथम स्वास्थ्य सम्बन्धी दृष्टिकोण से जो आक्षेप किये जाते हैं उनमें रोने से कायरता उत्पन्न होती है, विलाप करना मानव की बलहीनता का द्योतक है आदि की गणना है इस प्रकार के आक्षेपों के उत्तर–स्वरूप मैं केवल हिन्दी के प्रसिद्ध दैनिक पत्र स्वतन्त्र–भारत में प्रकाशित एक लेख ''नैनन भर आए नीर'' को प्रस्तुत कर देना ही प्रयाप्त समझता हूं। जिससे यह भलीभांति स्पष्ट हो जायेगा कि रोना हमारे स्वास्थ्य के प्रति हानिकारक है या न रोना।

''सामान्य जल के समान प्रतीत होने वाले आंसुओ में कितनी शक्ति है इसे प्रत्येक सह्रदय व्यक्ति भलीभांति जानता है।

महकवि मिलटन ने आंसुओं को मृत्युज्जयी'' कहा है आज के वैज्ञानिक कवि इस सत्य को तो चरितार्थ नहीं कर पाये है, किन्तु आंसु की कृमि नाशक शक्ति का परिचय उन्होंने अवश्य पा लिया है।

वैज्ञानिकों का कहना है कि एक चम्मच आंसू यदि 100 गैलन पानी में डाल दिया जाए, तो उस जल के समस्त कीटाणु मर जाएंगे। इतना ही नहीं आंसू की कृमि नाशक शक्ति इतनी तीव्र होती है कि 6 हजार गुने जल में मिश्रत होने पर भी यह शक्ति बनी रहती है।

अन्य कृमि–नाशक पदार्थों की अपेक्षा आंसू की सबसे बडी विशेषता यह है कि वह काफी समय तक कीटाणु से लड़ता रहता है तथा जब तक कीटाणु जीवित रहते हैं तब तक आंसू उनको नष्ट करने में अपनी चेष्टा बन्द नहीं करता।

हमारे शरीर में आंख एक अत्यन्त नाजुक अंग है। शायद इसी कारण प्रकृति ने उसकी रक्षा के लिए आंसू में ऐसी संरक्षण शक्ति भर दी है।

वैज्ञानिकों नें आंसू का रसायनिक विश्लेषण भी किया है। उनका कहना है कि आंसू में 94 प्रतिशत पानी होता है और 6 प्रतिशत में कुछ क्षार तथा लाइसोजाइम नामक रसायनिक तत्व। लाइसोजाइम हमारे खून में भी किसी न किसी मात्रा में रहता है। वस्तुतः कृमि नाशक शक्ति इसमें ही रहती हैं।

जब आंसू निकलता है उस समय मनुष्य में सिसकने तथा फूट फूट कर रोने की भावना जाग्रत हो उठती है। प्रश्न है, आखिर हम रोते ही क्यों हैं? इस प्रसंग में विशेषज्ञों का मत है कि आज का मनुष्य अपने बाहरी जीवन एंव तदनुसार अपने मानसिक चिन्तन में पहले की अपेक्षा अधिक संवेदनशील हो गया है। उसकी भावनाएं अपने आदि रूप में बिल्कुल अपरिपक्व थी। और उन पर उसका काबू एक दम नहीं के बराबर था। भावनायें जिधर चाहती उधर मनुष्य को चलाती रहतीं। किन्तु इतने वर्षों के विकास में मनुष्य ने भावनाओं पर काफी काबू प्राप्त कर लिया है। आज का मनुष्य भावनाओं की दया पर मारा मारा फिरने वाला जीव नही है। मगर इसका मतलब यह नहीं है कि भावनाओं ने पराजय स्वीकार कर ली और वे मनुष्य की आज्ञाओं का बिना किसी विरोघ के पालन

करने लगीं है। इसके विपरीत वे मनुष्य के दबाव का हर दम विरोध करती हैं, उससे लड़ती हैं। भावनाओं की यह मजबूरी ही वस्तुतः हमारे रोने मे प्रतिफ़लित होती हैं। जब भावनाओं को अपने आदि रूप में खुल कर व्यस्त होने की सुविधा नहीं मिलती, तभी वे रूदन के रूप में बरबस बरस पड़ती हैं। जैसा कि कविवर 'प्रसाद' ने भी लिखा है :

जो घनी भूत पड़ी थी
मस्तक में स्मृति सी छायी।
दुदिन में आंसू बन कर
वह आज बरसने आयी।

जब हर्ष अथवा विषाद से हमारी भावनाएं अद्विलत होती हैं तो हमारी आंख के कोनों में एक तीखा वाष्पीय पदार्थ पैदा होने लगता है। उस तीखे वाष्प के कारण आंसुओं की थैली (लैक मेल सैक) की नली जो नाक के रास्ते निकला करती है, इस रास्ते न निकल कर आंख के रास्ते निकलने लगती है।

वैज्ञानिकों के मतानुसार जो आदमी कभी नहीं रोता वह साधारण ढ़ंग का आदमी नहीं होता। इस न रोने को उसके मस्तिष्क की विकृति माननी चाहिए। अक्सर देखा गया है कि न रोने वाला मनुष्य या तो दमा का शिकार होता है या उसके बहुत फोड़े निकलते हैं। यह भी कहा जाता है कि कुछ रोगों में आंसुओं का निकलना बिल्कुल बन्द हो जाता है। आयुर्वेद में आंसुओ द्वारा कितने ही रोगों के उपचार का भी उल्लेख मिलता है।

मनोविज्ञान–वेत्ता इस बात को भी मानते हैं कि कभी कभी दिल खोलकर रो लेना हमारे लिए बड़ा हितकर है।

प्राचीन काल में मिस्र में यह प्रथा कि महिलाएं अपने आँसू बोतलों में एकत्र किया करती थीं। उस अश्रु जल को लोग परम पवित्र मानते थे और मृत्यु के बाद इस अश्रु जल से भरी बोतलें भी शव के साथ क़ब्र में रख दी जाती थीं सोलहवीं शताब्दी में कुछ देशों में यह प्रथा थी कि जब किसी नारी का पति युद्ध में मारा जाता था तो वह अपने अनन्य प्रति–प्रेम एंव सतीत्व का प्रमाण देने के लिए विरह काल के आंसू सुन्दर फूलदार बोतलों में बड़े यत्न के साथ एकत्रित करके रखती थीं।

हास्य की भांति रूदन भी मानव का सहज स्वभाव है। हर्ष, प्रेम, करूणा, विरह, ग्लानि आदि भावनाओं का अतिरेक होने पर सामान्य रूप से आंखों में आंसू छलक आते हैं। उनसे न केवल अन्तःकरण की भावनांये प्रकट हो जाती हैं बल्कि दूसरे भी प्रभावित हुए बिना नहीं रहते। साहित्य में इसी लिए रूदन और आंसुओं को भी बहुत महत्व मिला है। कुछ लोग तो इसे हंसी से ज्यादा मुश्किल मानते हैं। उर्दू कवि 'दाग़' के शब्दों में:–

''थमते थमते थमेंगे आंसू
रोना है कुछ हंसी नहीं है।''

उपरोक्त विवरण से यह सुस्पष्ट है कि रोना, विलाप अथवा अश्रु धारा प्रवाहित करना स्वास्थ्य के प्रति हानिकारक नहीं है एंव नकायरता का घोतक ही है।

इसके विपरीत न रोना ही मनुष्य की बुद्धि शून्यता एवं रोगी होने का परिचायक है तथा उपरोक्त लेख से यह भी ज्ञात होता है कि हास्य की भांति रूदन एंव विलाप मानव प्रकृति है एंव प्रकृति पर आक्षेप करना अप्रत्यक्ष रूप से मानव प्रकृति निर्माता परमपिता परमात्मा (अल्लाह) पर आक्षेप है एंव अल्लाह पर आक्षेप करने का साहस करना मनुष्य के नास्तिक एंव अधर्मी (पापी) होने के लिये पूर्ण प्रयाप्त है।

दूसरी ओर कुछ धार्मिक दृष्टिकोण से भी आक्षेप किये जाते हैं। उदाहराणर्थ कभी कहा जाता है कि आशूर का दिन (मोहर्रम की दस तारीख) पहले ईद का दिन था। रोना धर्म में एक नई वस्तु को जन्म देना (बिद्दत) है विशेषतयः शहीदों पर रोना क्योंकि वह जीवित हैं।

आईये रोना धर्म में एक नई वस्तु का सम्मिलित करना है एंव शहीदों पर न रोना चाहिए इस पर भी दृष्टिपात करें। बिदअत क्या है? धर्म में किसी नयी वस्तु को सम्मिलित कर लेना ही बिदअत है जो कुरआन और हदीस के विपरीत हो। इस्लाम–अनुयाइयों को बिदअत व पाप, पुन्य व सदकर्म आदि का ज्ञान कराने वाला कौन था? प्रत्येक उत्तर देगा हजरत मोहम्मद। तो लोग यदि इमाम हुसैन पर विलाप करने को बिदअत व पाप समझते हैं तो हजरत मोहम्मद के जीवन चरित्र का ही अध्ययन करना होगा एंव आप का ही कथन एंव कर्म में मुसलमानों के हेतु इस योग्य होगा कि उसका पालन किया जाये। हजरत मोहम्मद की जीवन घटनाओं के अध्ययन से हमें यही ज्ञात होता है कि आप कितने ही बार रोये हैं एंव हजरत मोहम्मद स0 के देहावसान पर उनके सम्बन्धी, साथी

एंव पत्नियों ने भी विलाप किया है यह सब कुछ सुन्नियों की धार्मिक पुस्तकों में भी लिखा है उदाहरणार्थ देखिए सहीह बुखारी, व अहयाउल उलूम, रौज़तुलअहबाब आदि।

हजरत मोहम्मद ने हजरत खदीजा (आप की प्रिय पत्नी) की मृत्यु पर अश्रु बहाये हैं तथा उसके बाद भी जब कभी याद आ जाया करती थी रोया करते थे। इतना ही नही जिस वर्ष हज़रत ख़दीजा और हज़रत अबूतालिब (हज़रत मोहम्मद के चचा) का देहान्त हुआ है उस वर्ष का नाम भी आपने आमुल हुज़न (शोक का वर्ष) रखा। एक अंग्रेज लेखक वाशिंगटन अरविंग ने History of Islam (इस्लाम का इतिहास) नामक पुस्तक के पृष्ट 70 पर इस प्रकार लिखा है।

She was sixty five years of age. Mohemet wept bitterly at her tomb and clothed himself in mourning for her and Abu Talib. So that this year called the year of mourning.

अनुवादः–उसकी (खदीजा) की आयु 65 वर्ष की थी मोहम्मद उनकी समाधि (कब्र) पर फूट फूट कर रोये। खदीजा और अबूतालिब के मृत्यु शोक में मातमी वस्त्र धारण किये यथाकारेण वह वर्ष "शोक" वर्ष कहलाया।

किन्तु कहा जाता है कि उनको तो देहावसान हुआ था, विलापादि ठीक था किन्तु शहीद जिनके प्रति पवित्र कुरआन का आदेश है कि देखो शहीद को कदापि मरा हुआ न समझना। उन पर तो रसूल न रोये। जी नहीं हजरत मोहम्मद की जीवन कथाओं का अध्ययन कीजिए, ये समस्या स्वंय सुलझ जायेगी कि हज़रत मोहम्मद शहीद पर भी रोये हैं। जाफरे तैयार शहीद हैं आप की शहादत का समाचार जब हजरत फातिमा को ज्ञात हुआ तो आप रोने लगीं रसूल ने देखा तो मनाही न की, रोका नहीं बल्कि एक आदेश भी दे दिया है कि जाफ़र ऐसे व्यक्ति पर तो राने वालों को रोना ही चाहिए। चलिए निर्णय हो गया अब शहीद पर रोने पर आक्षेप करने का साहस किसी में न होना चाहिए। हजरत मोहम्मद ने यह कहकर कि जाफर ऐसे व्यक्ति पर रोना ही चाहिए बतला दिया कि जो व्यक्ति जाफ़र के ऐसे गुणों एंव विशेषताओं का पात्र हो एंव निर्दयता से शहीद किया जाये तो शोक मनाना ही चाहिए और यह कथन पवित्र कुरान की कसौटी पर खरा भी उतरता है इस लिए कि फिरऔन जो स्वंय को ईश्वर कहलवाता था उसके डूब कर मर जाने पर कुरान में है कि उस पर न जमीन रोयी न आकाश रोया, भाव यह हुआ कि कुकर्मी, दुष्ट एंव पापी की मृत्यु पर कोई भी अश्रु धारा प्रवाहित नहीं करता।

यदि अब भी हज़रत मोहम्मद के शहीद पर विलाप करने में किसी को सन्देह हो तो देखे रसूल के विलाप को न केवल शहीद पर बल्कि उस पर जो शहीदों में सर्वश्रेष्ठ है, और जिन्हें समस्त मुसलमान "सय्यदुश शुहदा" की उपाधि से विभूषित करते हैं अर्थात हज़रत हमज़ा। इतिहास के पृष्ठ साक्षी है कि जब हज़रत अमीर हमज़ा की उहद नामक युद्ध में शहादत हो जाती है एंव रसूल ने देखा कि हमज़ा की बहन आ रही हैं तब आपने हज़रत अली से कहा कि हज़रत हमज़ा के शव पर चादर डाल दो ताकि बहन की दृष्टि भाई के नग्न शव पर न पड़े। हज़रत अली अ. ने चादर उनके शव पर ड़ाल दी। जब आप की बहन आयीं और रोने लगीं तो हजरत मोहम्मद स. ने यह नहीं कहा कि तुम्हारे भाई जीवित हैं वह शहीद हुए हैं विलाप न करो अपितु स्वयं रोने लगे और यहां तक रोये कि आप की हिचकियां बंध गयी।

युद्ध स्थल से लौट कर जब आप मदीने आये और देखा कि प्रत्येक ग्रह से युद्ध में शहीद होने वाले सम्बन्धी पर विलाप करने की आवाज़ें आ रही हैं किन्तु अमीर हमज़ा पर रोने वाला कोई नहीं। देखिए पैग़म्बर स्वंय शहीदों पर रोने का आदेश दे रहे हैं। मदीने की स्त्रियों को जब यह ज्ञात हुआ तो एकत्रित हुयीं और अमीर हमज़ा पर विलाप किया।

लीजिए हज़रत हमज़ा पर रोने के लिए हज़रत मोहम्मद ने स्वंय आदेश दिया एंव आप ही का कथन एंव कर्म मुसलमानो के हेतु इस योग्य है कि उसका पालन किया जाये। किन्तु फिर भी ये कहा जाता है कि उस समय तो शोक मना लेना उचित है किन्तु कई वर्ष पश्चात भी उसी प्रकार शोक मनाना एंव परिपाटी सी बना लेना कदापि उचित नहीं। किन्तु आईए और देखिए रसूल स. कई वर्ष पश्चात अपनी प्रिय माता की क़ब्र पर अश्रु धारा प्रवाहित करते दृष्टिगोचर होते हैं इसको अंग्रेज लेखक वाशिंगटन अरविंग अपनी पुस्तक के पृष्ठ 181 पर इस प्रकार लिखता हैः–

" His (Mohd.) heart yearned to pay a

fatial tribute to her memory. He burst into tears on arriving at this trying place of tender effections.

अनुवादः—आपका (हज़रत मोहम्मद स.) का हृदय अपनी माता की क़ब्र पर पुत्र होने के नाते श्रद्धांजलियों के पुष्प चढ़ाने के लिए बेचैन हो गया अतएव आप उस स्थान पर पहुंचे जहां आप की प्रिय माता की क़ब्र थी और आप फूट फूट कर रोये।"

उपरोक्त स्थलों एंव घटनाओं से भली भांति विदित है कि विलाप करना बिदअत व पाप नहीं है, अपुति एक पुण्य कर्म है क्योंकि यह तो हज़रत मोहम्मद के द्वारा किये गये कर्मों के पालन हैं। अब आइये हज़रत मोहम्मद की पत्नियों के विलाप पर भी एक विहंग दृष्टि डाल लें। इसी अंग्रेज लेखक ने हजरत मोहम्मद की पत्नियों के विलाप को हज़रत मोहम्मद के देहान्त अवसर पर निम्न शब्दों में लिखा है :—

Ayesha outeries brought the other wives of Mohemet and their clamourous grief soon made the event khown throughout the city.

अनुवादः—आएशा की रोने की आवाज़ों को सुनकर हज़रत मोहम्मद स. की दूसरी पत्नियां भी आ गयीं तथा उनकी रोने की आवाज़ों ने रसूल स. की मृत्यु की ख़बर अतिशीघ्र शहर में पहुंचा दी।"

एंव जब रसूल स. के देहान्त का समाचार अबूबक्र ने हज़रत मोहम्मद स. के साथियों के समूह में सुनाया तब अरविंग लिखता हैः—

people (Sahaba) listened to Abubakar with tears and sobbings.

अनुवादः—लोग अबूबक्र की बात रो रो कर और सिसकियां लेकर सुन रहे थे।

अब तो सहाबा (हज़रत मोहम्मद के साथियों) के अनुयायी होने का दावा करने वाले भी विलाप पर आक्षेप नहीं कर सकते तथा रोने के विरोधी नहीं हो सकते।

उपरोक्त वर्णन से यह भली भांति स्पष्ट हो गया है कि रोना, विलाप करना आदि न तो स्वास्थ्य सम्बन्धी दृष्टिकोणानुसार ही हानिकारक है (बल्कि इस के विपरीत स्वास्थ्य के प्रति लाभप्रद है एंव न रोना ही रोगी एंव बुद्धिहीन होने का द्योतक है) तथा न रोना तो धार्मिक दृष्टिकोण से ही पाप है अपितु पुण्य है क्योंकि रोना हज़रत मोहम्मद का आदेश है तथा इसी रोने के लिये इमाम जाफ़रे सादिक़ ने कहा है :—

"रोये, रूलाए अथवा रोने वाले की सी मुखाकृति बनायें तो वह ज़न्नत का एवं जन्नत (स्वर्ग) उसकी है।"

✦✦✦

(पेज नं0 42 का बक़िया............)

सख़्त सुस्त कह बिन ज़याद ने
भेजा फिर यज़ीद के पास
सही वहां बेतरह मुसीबत
रह यज़ीद के क़ैदी खास

रोते इन्हें देख हंसता था
वह ज़ालिम जल्लाद यज़ीद
दुखद मोहर्रम मुज़लूमों का
बना ज़ालिमों के हित ईद

अहलेबैत ज़ालिम यज़ीद से
छुटकारा पाने के बाद
शाम देश से वापस आकर
हुये मदीने में आबाद

आज तलक जिस क़दर मुसीबत
सही हुये जिस क़दर ज़लील
ताक़त कहां क़लम जो लिखती
सब तकलीफ़ों की तफसील

याद शहीदों को करके सब
रोया करते थे दिन रात
हुयी यहां से दुनिया में
मजलिस मातम की शुरआत

राहे रास्त पर थे हुसैन
इस लिए अभी क़ायम है शान
मगर यज़ीदी खानदान का
मिटा जहां से नामों निशान

दुनिया के कोने कोने से
सुनते हैं हम हाय हुसैन
कितना प्यारा था अब भी है
और रहेगा भी दिन रैन

ऐ भारत के नौनिहाल
अपना लो सब हुसैन की राह
दुनिया में गर अमर नाम
कर जाने की है तुमको चाह

✦✦✦

(इमामिया मिशन लखनऊ प्रकाशन नं0 296)